दैनिक विश्वमित्र

हिन्दी का प्राचीनतम दैनिक—कोलकाता एवं मुंबई से एक साथ प्रकाशित
Oldest Hindi Daily VISHWAMITRA—Published Simultaneously from Kolkata and Mumbai

१२१, KOLKATA, May 3, 2001, कोलकाता, वैशाख शुक्ल १० सम्वत् २०५८ वृहस्पतिवार ३ मई, डाक ४ मई, २००१, मूल्य २ रुपए (हवाई डाक से २ रुपए १० पैसे)

कैंसर उपचार की दुनिया में तहलका

विशेष संवाददाता

जयपुर, २ मई। जयपुर के वैद्य नंदलाल तिवारी द्वारा खोजी गई दवा ने कैंसर के इलाज की दुनिया में तहलका मचा दिया है। तिवारी को खौफनाक कैंसर के उपचार में मिली चमत्कारिक सफलता का डंका विदेशों में भी बजने लगा है। भारत के अलावा अमेरिका, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, अफ्रीका, दुबई, बहरीन, सिंगापुर, केन्या, पाकिस्तान, बेल्जियम आदि कई देशों के कैंसर रोगी तिवारी से उपचार कराने के बाद स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। विदेशों की प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं ने इन रोगियों के कैंसर से मुक्त हो जाने की पुष्टि की है। सुखद आश्चर्य की बात यह है कि इनमें से अधिकतर रोगी अंतिम अवस्था (लास्ट स्टेज) के कैंसर से पीड़ित थे। तिवारी को मिली इस अपूर्व सफलता को देखकर विकसित देशों के प्रतिष्ठित चिकित्सालय भी उन्हें मरीज भेजने लगे हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में बने विश्व के प्रथम कैंसर चिकित्सालय दी रॉयल मर्सडेन हास्पिटल, लंदन तथा सरे (ब्रिटेन) ने श्री तिवारी की सेवाओं का लाभ उठाने की पहल की। दुनिया के इस नामी कैंसर अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. सी.एल. हार्मर तथा रजिस्ट्रार रिचर्ड वर्टन ने लीवर कैंसर की रोगी सोफिया को उपचार के लिए तिवारी के पास भेजा। इस रोगी को अप्रत्याशित लाभ होने के बाद क्लीवलैंड (अमेरिका) के विश्व प्रसिद्ध चिकित्सालय दी इगेल्स क्लिफ मेडिकल प्रैक्टिस के विशेष डॉ. टी.ओ. केल्लोगन तथा डॉ. डी.लीच ने लंदन से रक्त कैंसर के इलाज के लिए उनके द्वार पहुंचे नाजिर हुसैन को कारगर उपचार के लिए तिवारी के पास भेजा। इसके पश्चात् कैलीफोर्निया (अमेरिका) के मशहूर चिल्ड्रेन्स हास्पिटल ने कैंसर पीड़ितों के उपचार में तिवारी की सेवाओं का लाभ लिया। इस क्रम में लंदन का वह नामी गिरामी सेंट थामस हास्पिटल भी पीछे नहीं रहा, जिससे एफ.आर.सी.एस. की चिकित्सकीय डिग्री लेना भारत समेत अनेक देशों के चिकित्सा विशेषज्ञों के लिए बड़ी बात मानी जाती है। इस थॉमस हॉस्पिटल के विख्यात विशेषज्ञ डॉ. हॉवई की ओर से हॉस्पिटल के रजिस्ट्रार निकलोसेफ ने अपने यहां भर्ती कैंसर रोगी के उपचार के लिए श्री तिवारी को पत्र लिखा। अमेरिका के रक्त कैंसर से पीड़ित के. गोविंदराव के यहां आकर श्री तिवारी से दवा ले जाने तथा उससे लाभान्वित होने के बाद कैलीफोर्निया के मनजीतसिंह ने भी श्री तिवारी से उनकी बनाई आयुर्वेदिक औषधि 'कर्कटोल' लेकर रक्त कैंसर से निजात पाई।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कैंसर उपचार की दुनिया में...

(प्रथम पृष्ठ का शेषांश)

तिवारी के उपचार से कैंसरमुक्त हुए देश-विदेश के ऐसे कई रोगियों से साक्षात्कार कर ब्रिटेन की मसुबेन अमलाथी ने इस करिश्माई कामयाबी पर एक वृत्त चित्र (डॉक्यूमेंटरी) बनाया है। इस वीडियो फिल्म में कैंसर जैसे असाध्य माने जाने वाले रोग से ग्रस्त स्त्री-पुरुषों की रोग मुक्ति की सत्य कथाएं देख-सुन कर महसूस होता है कि श्री तिवारी ने 'विचित्र किन्तु सत्य' के अंदाज में असंभव को संभव कर दिखाया है। इस सत्य से साक्षात्कार किए बिना तथा मृत्युशैया से उठकर चंगे हुए रोगियों से मिले बगैर सहसा विश्वास नहीं होता कि कैंसर जैसे इस प्राणघातक रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए कारगर दवा की खोज पर पूरी दुनिया में अरबों रुपए खर्च किए जा रहे हैं और फिर भी पूरी सफलता नहीं मिल रही है, उस पर काबू पाने में श्री तिवारी अकेले अपने बूते कामयाब हो चुके हैं। २/१३, मालवीय नगर, जयपुर- ३०२०१७ (फोनः ०१४१-५२१२२४, ५२१३८५) में रह रहे वयोवृद्ध वैद्य नंदलाल तिवारी की इस असाधारण सफलता का ही कमाल है कि उन्हें एक लाख रुपए तक के एक्जीक्यूटिव क्लास के हवाई टिकट भेजकर कई देशों में कैंसर पीड़ित अपने ईलाज के लिए बुला रहे हैं। लगभग २५ वर्षों की अनवरत साधना के बाद तिवारी ने प्राचीन ग्रंथों व भारत सरकार द्वारा आयुर्वेदिक औषधि के रूप में मान्य ८ वनस्पतियों का शुद्ध मिश्रण तैयार कर उसे 'कर्कटोल' नाम दिया है। कैंसर की इस महाऔषधि को देश के प्रसिद्ध शीर्षस्थ एलोपैथिक चिकित्सा संस्थान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के भैषज विज्ञान (फार्माकोलाजी) विभाग ने भी परीक्षण के बाद पूर्ण रूप से सुरक्षित व निरापद घोषित किया है। देश-विदेश के कई एलोपैथिक चिकित्सक भी इस दवा से अपने कैंसर पीड़ित परिजनों का उपचार करा चुके हैं।